ओम् शान्ति 27-5-21 मधुबन

संस्कार शुद्धिकरण योग तपस्या भटठी का कार्यक्रम

(1 जून से 24 जून-2021 तक)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, वर्तमान समय और परिस्थितियों को देखते हुए अपनी अचल-अडोल एकरस स्थिति बनाने वाले, मात-पिता समान सम्पन्न व सम्पूर्ण बनने के तीव्र पुरुषार्थ में तत्पर, सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हमारी मीठी मातेश्वरी जी का स्मृति मास (जून) हम सबको विशेष उनके समान तीव्र पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है। तो आओ हम सब मिलकर, एकान्तवासी बन ऐसी योग तपस्या करें जिससे स्वयं के संस्कारों का शुद्धिकरण हो और इस पुराने संसार का परिवर्तन हो।

इसके लिए विचार है कि सभी सेवास्थानों पर विशेष 1 जून से 24 जून 2021 तक ''संस्कार शुद्धिकरण योग तपस्या'' के कार्यक्रम रखे जाएं। संस्कार शुद्धिकरण के लिए कुछ बातों की परहेज हर एक को अवश्य रखनी है। साथ-साथ मातेश्वरी जी ने किस पुरुषार्थ से अपनी सम्पन्नता को प्राप्त किया, उनके पुरुषार्थ की मुख्य 24 धारणायें भी लिख रहे हैं, रोज़ एक बात पर हर एक विशेष अटेन्शन देंगे तो मात-पिता समान सहज बन सकेंगे।

संस्कार शुद्धिकरण के लिए मुख्य अटेन्शन

1) संकल्पों का संयम (ईश्वरीय मर्यादाओं की रेखा के अन्दर रहकर संकल्प उठाने हैं, एक भी संकल्प मर्यादा के विपरीत न चले)

2) बोल का संयम - कम बोलें, धीरे बोलें, जितना आवश्यक हो उतना ही बोलें। अधिक से अधिक समय मन और मुख का मौन रखें।

3) भोजन बहुत योगयुक्त हो, पूरा ही समय बाबा की याद में भोजनपान करें। भोजन के समय किसी भी प्रकार की वार्तालाप न हो।

4) अमृतवेले उठने से लेकर रात्रि सोने तक की दैनिक दिनचर्या का विशेष चार्ट भी आपके पास भेज रहे हैं। उसी चार्ट अनुसार स्वयं की चेकिंग करें तथा स्वयं को स्वयं ही मार्क्स दें।

5) हर एक लक्ष्य रखे कि 24 घण्टे में कम से कम रोज़ 8 घण्टे योग तपस्या करनी है। बीच-बीच में ज़ोन/सबज़ोन वाइज ऑनलाइन योग भट्ठी के कार्यक्रम चलते रहें तो बहुत अच्छा है।

6) बाबा के कमरे में सवेरे 9 बजे से शाम को 6 बजे तक अखण्ड योग भट्ठी चलती रहे। जिसमें हर एक को लगातार एक या दो घण्टे तक बैठना है। बीच-बीच में उठना बैठना नहीं है।

7) 24 दिन के लिए सभी संसार समाचारों की लेन-देन कम से कम करें। अन्तर्मुखता की गुफा में रह, पूरा समय आत्म अभिमानी स्थिति में रहने का अभ्यास करें।

8) मधुबन से जो योग अभ्यास की विशेष एक प्वाइंट पत्र पुष्प में भेजी जा रही है। उसी पर मनन-चिंतन करते उसका स्वरूप बनें।

नोट:- अभी तक कोरोना के कारण यदि सेवाकेन्द्रों पर आने जाने का प्रतिबन्ध है तो आप अपने-अपने स्थानों पर भी बाबा के कमरों में योग अभ्यास कर सकते हैं। बाबा के सभी स्थान, चाहे वह सेवाकेन्द्र हैं या पवित्र प्रवृत्ति वालों के घर हैं सभी स्थान, तपस्या कुण्ड, शान्तिकुण्ड बनें, ऐसी शुभ भावना है।

मातेश्वरी जी के जीवन की मुख्य धारणायें

1) जैसे मम्मा मुरली की मस्तानी थी, बाबा का एक एक शब्द बड़े प्यार से सुनती, समाती थी। फिर बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट करके सुनाती थी। ऐसे हमें भी बाबा की साकार व अव्यक्त मुरली एकाग्रचित हो शक्तिशाली स्थिति में रह सुनना है।

2) मम्मा को ड्रामा का पाठ बहुत पक्का था। उन्हें हर दृश्य साक्षी स्थिति में रह देखने का अभ्यास था, इसलिए मम्मा कभी किसी भी दृश्य को देख हलचल में नहीं आई, उनका चेहरा सदा मुस्कराता हुआ एकरस रहा। ऐसे हमें भी अपनी साक्षीदृष्टा स्थिति बनानी है। कभी कोई भी दृश्य को देखते, नथिंगन्यु की स्मृति से प्रश्नों की उलझन से परे अचल स्थिति बनानी है।

3) मम्मा सदा बहुत ऊंचे रूहानियत के नशे में रही। मम्मा के चेहरे पर कभी फिकर के चिन्ह नहीं दिखाई दिये, कोई शरीर भी छोड़ दे या अपने ही शरीर में कुछ हुआ तो भी ज्यादा सोचा नहीं। मम्मा साधारणता से कभी नहीं रही। ऐसे हमें भी मम्मा समान सदा रूहानियत में रहना है। अपनी बेफिक्र स्थिति बनानी है।

4) मम्मा को अपने लक्ष्य की सदा स्मृति रहती थी इसलिए उनकी सूरत और सीरत में सर्व दैवी लक्षण दिखाई देते थे। सदा यही लक्ष्य रहा कि मुझे गुणवान बनना है, सबके गुण देखने हैं और गुणों का दान करना है - यही तीन बातें हम सबको भी धारण कर मम्मा समान गुणमूर्त बनना है।

5) मम्मा पढ़ाई में सदा रेग्युलर और पंक्चुअल रही। मुरली और अमृतवेले का योग कभी मिस नहीं किया। मम्मा सदा ऊपर की स्थिति में, उपराम होकर रही। कभी गफलत नहीं की। जितना जरूरी होता उतना ही बोलती, बाकी समय चुप रहती। हमें भी यही अभ्यास करना है।

6) मम्मा मर्यादाओं में सदा एक्यूरेट रही। उनकी स्थिति नेचुरल देही-अभिमानी थी। मम्मा की चलन से बाबा के गुण और कर्म दिखाई देते थे। ऐसे बाबा जो हमें सिखा रहा है, वही हमारे से दिखाई दे। पुराने स्वभाव-संस्कार के वश कोई भी कर्म कर्मेन्द्रियों से न हो।

7) मम्मा में तीन विशेषतायें स्पष्ट दिखाई देती थी - एक रूहानियत, दूसरा स्वमान और तीसरा बाप से सर्व सम्बन्ध का स्नेह। तो हमें भी इन्हीं तीन विशेषताओं को स्वयं में धारण करना है, इससे देह-अभिमान सहज खत्म हो जायेगा।

8) मम्मा सिर पर ज्ञान अमृत का कलष धारण कर अनेक सेवाओं के निमित्त बनी, लेकिन उनके मुख से कभी यह शब्द नहीं निकला - कि यह सेवा मैंने की। सदा कहती पिता-प्रसादे। बाप से मिला हुआ सुना रही हूँ। उनकी वाणी में नम्रता, मधुरता, सच्चाई झलकती थी। मम्मा के समान हमें भी अपने मन में किसी के लिए ग्लानि नहीं रखनी है। कभी कडुवे बोल नहीं बोलने हैं। अभिमान में नहीं आना है।

9) मम्मा का चित बिल्कुल साफ था। वह हर बच्चे की बात दिल में ऐसे समा लेती थी जैसे कोई बात हुई ही नहीं। हर एक की कमी कमजोरी को अन्दर समा लेना और उसको स्नेह की शक्ति से चेंज कर देना। किसी का भी अवगुण चित पर न रहे, इसमें मम्मा के समान बनना है।

10) मम्मा में संकल्पों को समेट कर बीजरूप स्थिति बनाने का, विस्तार को सार में लाने का नेचरल अभ्यास था। समेटना, समा लेना, इस विशेषता के कारण मम्मा की वाणी बहुत प्रभावशाली थी। उनके चेहरे पर दिव्यता और सत्यता की स्पष्ट झलक दिखाई देती थी। ऐसे मम्मा समान बनना है। किसी भी बात के विस्तार में नहीं जाना है। संकल्पों को समेटकर बीजरूप स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करना है।

11) ज्ञान चन्द्रमा मां के समान शीतल योगी बनना है। शीतलता की शक्ति से क्रोध करने वाली आत्मा भी शीतल बन जाये। कभी क्रोध अग्नि में जलना नहीं है।

12) मम्मा के समान सदा अथक बनना है। जैसे मम्मा के चेहरे पर कभी थकावट के चिन्ह नहीं देखे। कितनी भी सर्विस हो लेकिन सदा अथक रही। ऐसे अथक होकर सेवायें करनी हैं।

13) अनेक आत्माओं के संग में आते हुए, सभी की बातों को सुनते हुए, मम्मा खुद हर बात से न्यारी और प्यारी रही। कभी मम्मा की दृष्टि में किसी आत्मा के प्रति भी चेंज नहीं आई। वही मीठी दृष्टि हर किसी के प्रति रही। कमियों पर ध्यान खिंचवाते भी उनकी भावना परिवर्तित नहीं हुई। ऐसे मम्मा समान अपनी न्यारी प्यारी, शुभ भावना सम्पन्न स्थिति बनानी है।

14) मम्मा के मुख पर कभी किसी भी आत्मा प्रति कोई अशुभ बोल नहीं निकले, बच्चों के अवगुणों का पता होते भी उनके प्रति नफरत या घृणा का भाव नहीं रहा। सदा शुभ श्रेष्ठ भाव, सबके कल्याण का ही भाव रहा इसलिए हर एक का मम्मा से जिगरी स्नेह था। ऐसे हमें भी हर आत्मा के प्रति शुभ श्रेष्ठ भाव, कल्याण का भाव रखना है।

15) सदा शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली माँ का सदा यही लक्ष्य रहा कि सबके दु:ख दूर करूँ। किसी भी हालत में, किसी भी बात में मम्मा को कभी क्रोध तो क्या, परन्तु आवेश भी नहीं आया। मम्मा का तेज आवाज हमने कभी नहीं सुना। मम्मा शान्ति की अवतार, प्रेम की मूर्त थी। ऐसे हम सबको मम्मा समान बनना है।

16) गम्भीरता का गुण जो सर्वगुणों की खान है, उसका प्रत्यक्ष स्वरुप मम्मा में देखा। ममता वाली माँ नहीं, अच्छी माँ, टीचर, गुरु जैसी माँ। खुद के सबूत से सिखाने वाली माँ। गम्भीरता और धैर्यता के कारण मम्मा में समाने और समेटने की शक्ति थी। समाने और समेटने के कारण मम्मा सहनशीलता की मूर्त थी। हमें भी सहनशीलता का गुण धारण कर अपने स्वभाव को शान्त और शीतल बनाना है।

17) मम्मा ने कभी कोई मेहनत वाला हार्ड पुरुषार्थ नहीं किया। उनके चेहरे पर सदा प्युरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। इस प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण ही उनका इतना गायन और पूजन होता है। ऐसे मम्मा समान हमें भी प्युरिटी की रॉयल्टी को धारण करना है।

18) मम्मा ने कभी श्रीमत में अपनी मत मिक्स नहीं की। मेरा विचार यह है, मैं यह समझती हूँ... यह मम्मा ने कभी नहीं कहा। परन्तु बाबा ने यह कहा है, बाबा ने यह समझाया है। वह भी बताने में ऐसा रस जो हर एक को सहज समझ में आ जाए कि बाबा ने किस रहस्य से कहा है। ऐसे मम्मा के समान हर कदम श्रीमत प्रमाण उठाने हैं।

19) मम्मा ने अपने लिए कोई कामना नहीं रखी। बाप के दिये हुए खजाने से सदा सम्पन्न रही इसलिए सर्व की मनोकामनायें पूर्ण करने वाली कामधेनु माँ बन गई। हमें भी परमात्म खजानों से स्वयं को भरपूर कर रायॅल संस्कार धारण करने हैं। कभी कोई से भी कोई कामना नहीं रखनी है।

20) मम्मा, शिवबाबा के ज्ञान को जीवन मे धारण कर विद्या की देवी, गॉडेज आफ नॉलेज बन गई। हमें भी उनके समान मॉस्टर नॉलेजफुल बनना है। ज्ञान को जीवन में धारण कर सर्वोत्तम श्रेष्ठ पार्ट बजाना है।

23) मम्मा सदा अपने शान्त स्वधर्म में स्थित रही। बाबा ने जो कहा मम्मा की बुद्धि ने माना। मम्मा ने कभी नहीं कहा होगा - मैंने यह किया, सदा बाबा के तरफ इशारा किया। मैं बेटी हूँ, मात-पिता वह है, मम्मा इतनी निरंहकारी थी। ऐसे हमें भी मम्मा समान निरंहकारी बनना है। अपने शान्त स्वधर्म को कभी नहीं छोड़ना है।

24) मम्मा सदा एकान्त में रहती थी, रोज़ 2 बजे सवेरे उठकर बाबा की यादों में एकान्त में चली जाती थी। वह सदा एक की लगन में मगन रहती। उनके दो स्लोगन सदा याद रहें 1- हर घड़ी अन्तिम घड़ी है। 2- हुक्मी हुक्म चला रहा है। इसी स्मृति से हम भी सहज नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बन जायेंगे। किन्हीं झंझटों में नहीं जायेंगे और अपनी बुद्धि को सब बातों से फ्री रख बाबा की आशाओं को पूर्ण कर सकेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।